PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रकृति के विविध रंग–सुमित्रानंदन पंत के संग

• साक्षी कुमारी • नेहा सिन्हा • प्रीति कुमारी
• मंजुला सुशीला

Received : November 2018
Accepted : March 2019
Corresponding Author : Manjula Sushila

Abstract : पंत के काव्य में प्रकृति के प्रति अपार प्रेम और कल्पना की ऊँची उड़ान देखने को मिलती है। अपनी विभिन्न कविताओं के माध्यम से प्रकृति के विविध रूप रंगों यथा– चाँदनी, बादल, छाया, ज्योत्स्ना, किरण, प्रात: संध्या, वर्षा, वसंत, नदी, निर्झर, भ्रमर, तितली, पक्षी आदि पर पंत ने स्वतंत्र रूप से कविताएँ लिखी हैं। प्रकृति प्रेम की प्रथम रचना 'वीणा' से लेकर 'लोकायतन' नामक महाकाव्य तक उनका प्राकृतिक परिवेश के प्रति प्रेम पूर्णत: दिखाई देता है। कहीं–कहीं तो पंत ने प्राकृतिक सौंदर्य के सम्मुख नारी सौंदर्य के प्रति आकर्षण को भी न्यून या गौण मान लिया था–

'' छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल–जाल में
कैसे उलझा दूँ मैं लोचन?''

साक्षी कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

नेहा सिन्हा
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

प्रीति कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

मंजुला सुशीला
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : manjula71pwc@gmail.com

उनका प्रत्येक वर्णन मानव हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। उन्होंने संध्या बेला को एक आकर्षक युवती के रूप में दर्शाया है। 'संध्या' का मानवीकरण कर पंत ने छायावादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता को मनमोहक आयाम प्रदान किया है। प्रकृति के सुंदर रूपों के प्रति आकर्षण के कारण ही पंत में मनन–चिंतन की शक्ति आई और वे हिन्दी साहित्य जगत को स्वर्ण काव्य प्रदान कर सके।

संकेत शब्द (Key words) : स्वच्छंद–उड़ान, अटूट–विश्वास, मानव–जीवन, जिज्ञासा, लोकमानस।

भूमिका:

हमने अपने शोध कार्य में पंत की प्रकृति संबंधित विविध कविताओं द्वारा प्रकृति की ओज, सुंदरता एवं आज के संदर्भ में उसकी स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है। प्रकृति आदि काल से मानव की सहचरी रही है। प्रकृति छायावादी कवियों के साथ–साथ रोमांटिक कवियों की भी प्रेरणा रही है। पंत की तुलना पाश्चात्य कवि वर्ड्सवर्थ से की जाती है। इनका व्यक्तिव केवल कविता में है, लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं कि वह सिर्फ कविता की दुनिया में ही साँस लेते हैं। पंत जी में अद्‌भुत सहानुभूति–क्षमता है। जनगण के प्रति उनकी सहानुभूति सतही नहीं है, बल्कि अत्यंत गहरी है। चूँकि हमने अपने शोध–कार्य के लिए पंत के प्रकृति चित्रण को आधार बनाया है अत: इसका परिचय प्राप्त करना आवश्यक है :–

छायावाद अपना काम पूरा कर चुका था, उसे केवल कल्पना के सहारे जीवित रखना असंभव था और इतिहास की भी माँग थी इसलिए पंत जी ने इसे एक अलग रूप प्रदान किया। हर एक युग का अंत होता है और फिर नये युग का आरंभ होता है, किंतु उसमें उस पुराने युग की छाप अवश्य होती है। इसी प्रकार द्विवेदी युग के बाद छायावाद का उदय हुआ। प्रकृति के महत्व की जानकारी पंत के वास्तविक रचना-संसार से गुजरने के बाद ही हो सकती है।

अत: इस शोध कार्य के अंतर्गत उनकी रचनाओं पर दृष्टि डाली गई है एवं पंत की प्रतिनिधि रचनाओं का विवेचन किया गया है।

उद्देश्य:

सामान्य :- छायावाद में 'प्रकृति के चितेरे कवि' के रूप में पंत ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के विविध रूपों के माध्यम से प्रकृति के महत्व को उजागर करने का प्रयत्न किया है। प्रकृति के महत्व को जगजाहिर करना एवं प्रकृति के अस्तित्व को बचाना ही हमारा उद्देश्य है।

विशिष्ट :- सुमित्रानंदन पंत के आ जाने से छायावादी युग में प्रकृति-वर्णन के क्षेत्र में महान परिवर्त्तन हुए, विशेषकर प्रकृति का मानवीकरण करना अर्थात् प्रकृति को मनुष्य से जोड़ना। इस शोध का उद्देश्य प्रकृति के नष्ट होते अस्तित्व की रक्षा करना है। पंत की कुछ रचनाओं के माध्यम से आज के भौतिकवादी युग में लोगों के मन में प्रकृति के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना एवं प्रकृति की रक्षा के प्रति सजग बनना ही हमारा विशेष उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति:

द्वितीयक पद्धति :- इस परियोजना कार्य के लिए शोध प्रविधि की द्वितीयक पद्धति की सहायता ली गई है। जिसके तहत तथ्यों के संग्रह के लिए अध्येय रचनाओं पर किए गए पूर्व शोध ग्रंथों, पत्रिकाओं तथा इंटरनेट की मदद ली गई है।

छायावादी कवियों का प्रकृति चित्रण :- जैसा कि हम सभी को ज्ञात है कि कवि प्राचीन काल से ही प्रकृति के प्रति आकृष्ट हुए हैं। आरण्यकों और उपनिषदों में यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति-चित्रण नहीं हुआ है परंतु प्रकृति की उपस्थिति का अनुमान सदैव होता है। महादेवी वर्मा को वेदों और पुराणों का स्वर भी छायावाद से मिलता-जुलता प्रतीत होता है। वे कहती है:-''विश्व के रहस्य से संबंध रखने वाली जिज्ञासा जब केवल वृद्धि के सहारे गतिशील होती है, तब वह दर्शन की सूक्ष्म एकता को जन्म देती है और जब वह हृदय का आश्रय लेकर विकास करती है तब प्रकृति और जीवन की एकता का अर्थ व्यक्त होता है।''

प्रकृति चित्रण की अधिकता, छायावादी कवियों की रचनाओं में अधिकांशत: देखने को मिलती हैं। छायावादी कवियों ने प्रकृति को अपना आत्मीय माना एवं उससे सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित किया। इस काल के काव्य में प्रकृति का यह स्थान अनूठा था। प्रसाद ने प्रकृति को ईश्वर की अनुपम भेंट के रूप में माना है :-

''चिर मीलित प्रकृति से पुलकित
वह चेतन पुरूष पुरातन
निज शक्ति तारंगाथित था
आनन्द अँबुनिधि शोभन''

(प्रसाद, 124)

प्रकृति मानव की सहचरी है, जो ईश्वरीय शक्ति के रूप में उभरी है। प्रसाद अपनी इस सहचरी को नित्य नूतन रूप देकर उसका शृंगार करते हैं और उसके साथ क्रीड़ा करते हैं। आज के इस युग में जब मानव भोगवादी बन बैठा है एवं हर वक्त प्रकृति पर विजय पाने की कामना करता है, ऐसे में प्रसाद अपनी रचनाओं के माध्यम से भोगवादी प्रणाली और तद्जन्य प्रदूषण के विरूद्ध चेतावनी देते है।

निराला के प्रकृति-निरूपण की विशिष्टता यह है कि निराला के मन में जो प्रश्न उठते हैं उनका समाधान उन्हें प्रकृति में मिलता हैं। उनकी रचनाओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति एक ही जीवन के दो तत्व हैं। किसी एक के बिना दूसरे के अस्तित्व की कल्पना करना संभव नहीं है। मनुष्य जब थकता है, रूकता है, निराश होकर टूटता है, तब प्रकृति ही उसे नया बल व नयी स्फूर्ति प्रदान करती है।

निराला अद्वैतवादी कवि हैं। प्रकृति उनके ब्रह्म की माया है। प्रकृति के साथ अपना संबंध व्यक्त करते हुये निराला कहते हैं- ''जो कवि और महाकवि होते हैं वे प्रकृति के हर एक कमरे में प्रवेश करने का जन्मसिद्ध अधिकार लेकर आते हैं... यही कारण है कि जड़ और चेतन, सबकी प्रकृति कवि को अपना स्वरूप दिखाती है। वे दर्पण हैं और प्रकृति का प्रत्येक

विषय उनपर पड़ने वाला बिंब है।'' (निराला, 96) निराला की रचनाओं का साकार रूप प्रकृति ही है।

पंत की रचनाओं में भी मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के पर्याय हैं। इन्हें काव्य लेखन की प्रेरणा अपनी जन्मभूमि के नैसर्गिक सौंदर्य से प्राप्त हुई। प्रकृति के सान्निध्य में अपना जीवन बिताने से कवि का हृदय प्रकृति की आत्मा से मिल गया है। छायावाद में प्रकृति के स्थान की विवेचना करते हुये पंत लिखते हैं, ''इस अनंत रूप रंगमयी प्रकृति के असंख्य रूपों का चित्रण कर उसने जन-संकुल नागरिक जीवन की संकीर्णता में खोये हुए मनुष्य के हृदय को उबाकर उसके सम्मुख 'दिगन्त विस्तृत जीवन प्रांगण' खोल दिया जिसमें उन्मुक्त साँस लेकर वह नवीन जीवन -प्रेरणा ग्रहण कर सके। निसर्ग से तादात्म्य स्थापित कर उसने सुख-दुख की भावना को सीमित मनः स्थितियों की घुटन से मुक्त कर उसे चारों ओर प्राकृतिक व्यापारों में व्याप्त कर मुनष्य को प्रकृति के और प्रकृति को मनुष्य के निस्सीम अनन्य स्नेह पास में बाँध दिया।'' (पंत, 197)

महादेवी वर्मा की रचनाओं में भी प्रकृति सर्वोपरि है परंतु उनके प्रकृति प्रेम के पीछे उनकी रहस्यात्मक सौंदर्य चेतना है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में सौंदर्य का चरम रूप देखने को मिलता है। छायावादी कवि के प्रकृति प्रेम का विश्लेषण करते हुये वे लिखती हैं कि :- ''छायावाद का कवि न प्रकृति के किसी रूप को लघु या निरपेक्ष मानता है न अपने जीवन को, क्योंकि वे दोनों ही एक विराट रूप समष्टि में स्थित रहते हैं। और एक व्यापक जीवन से स्पन्दन पाते हैं।'' (वर्मा, 88)

महादेवी वर्मा ने अपनी कविताओं के माध्यम से मनुष्य के दुखी हृदय और प्रकृति के संबंध में प्राण डाल दिये। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य के छायावादी युग को प्रकृति चित्रण में सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त है।

प्रकृति के चितेरे पंत - किसी भी अन्य छायावादी कवियों को उस उपाधि से नहीं नवाजा गया, जो पंत को मिली- 'प्रकृति के चितेरे कवि पंत'। पंत प्रकृति केन्द्रित साहित्य लिखते थे। पंत को अपनी इसी विशेषता के कारण हिंदी का 'वर्ड्सवर्थ' कहा जाता है। पंत के सभी काव्य ग्रंथ जैसे- वीणा, पल्लव, गुंजन, ग्राम्या इत्यादि के वर्ण्य-विषय मूलतः प्रकृति ही हैं। जहाँ 'पल्लव' में प्रकृति सजीव है तथा छायावाद की स्थापना भी इन्हीं रचनाओं की व्यापकता से संभव हो सकती है वहीं दूसरी ओर ग्राम्या में कवि की दृष्टि अब प्रकृति से अधिक मानव पर है और आकाश से अधिक धरती पर तथा वह प्रकृति के प्रति स्पष्टतः कहता है:-

हार गई तुम
प्रकृति!
रच निरूपन
मानव कृति?
निखिल रूप, रेखा, स्वर
हुए निछावर
मानव के तन मन।

पंत ने प्रकृति चित्रण करते हुए कई ऋतुओं को अपनी कविताओं में शामिल किया। उस ऋतु में घटित सभी क्षणों को बहुत-ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया। 'उत्तरा' में कवि ने प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण किया और शरद ऋतु में तो कहीं-कहीं पूर्ण नारी चित्र अत्यन्त भव्य बन पड़े हैं। पंत की दृष्टि में प्रकृति व्यक्ति के बिना अपूर्ण ही है और व्यक्ति देवता है तथा वह उसकी उपासिका- मात्र है।

पंत के काव्य में तीन प्रकार की रचनाएँ दिखती है :- विरह संबंधी, चितंन- प्रधान और प्रकृतिपरक।

प्रकृति के संदर्भ में पंत जी की चर्चा करते हुए कई बातों पर ध्यान दिया जाता है जैसे प्रकृति या तो आध्यात्मिक भावों के प्रकाशन के लिए या उपदेशों के लिए। पंत ने प्रकृति पर सबसे ज्यादा लिखा है। 'वीणा' से लेकर 'अतिमा' तक उन्होंने प्रकृति-प्रेम का वर्णन किया है। अपनी रचनाओं में पंत जी ने कवि के व्यक्तित्व, स्वभाव और कवि कर्म की व्याख्या की है, जहाँ उनका विनम्र और सरल व्यक्तित्व सामने आया है। यही सरलता ओर विनम्रता वे प्रकृति के प्रति भी रखते हैं। उन्होंने प्रकृति को काफी नजदीक से अनुभव किया है। यही कारण है कि वे प्रकृति वर्णन में इतने सक्षम है।

उनकी रचनाओं के अध्ययन से यह बिल्कुल ज्ञात नहीं होता कि हम उनकी रचनाओं का अध्ययन कर रहे हैं बल्कि उनकी रचनाएँ हमे ऐसा अनुभव कराती हैं जैसे हम प्राकृतिक

दृश्यों में भ्रमण कर रहे हैं । अत: हम कह सकते है कि पंत 'प्रकृति के चितेरे' कवि हैं।

पंत का नारी दर्शन - प्रकृति के साथ-साथ छायावादी कविता में नारी दर्शन की भी प्रधानता दिखाई पड़ती है। द्विवेदी-युग की कविता में नारी के प्रति दया का भाव तो है, पर यथोचित सम्मान का भाव नहीं है; उस युग मे नि:संदेह विधवाओं को लेकर अनेक कविताएँ लिखी गई हैं। स्वच्छंदतावादी कविताओं में नारी की तुलना में प्रकृति को ही अपनाने योग्य कहा गया है।

पंत अपनी कविता 'उच्छवास' 'आँसू' और 'ग्रंथि' की बालिका के साथ स्नेह-सूत्र' में बँधते है और यहाँ तक कि 'भावी पत्नी' की कल्पना भी करने लगते हैं। वे अनुमान करने लगते है कि प्रकृति से ही काम नहीं चल सकता; प्रकृति चाहे जितनी सुंदर और भाव-प्रवण हो, किंतु वह पूर्णरूप से पुरूष के भावों को प्रतिध्वनित नहीं कर सकती है अथवा अधिक से अधिक उन भावों को प्रतिध्वनित ही कर सकती है। और तब स्वाभाविक है कि वह उस ''टकराती, बिलखाती-सी पगली-सी फेरी देती'' हुई प्रतिध्वनि के लिए कोई दूसरा आश्रय ढूँढ़े-ऐसा आश्रय जो प्रत्युत्तर दे सके। कवि ने बड़ी विकलता के साथ अनुभव किया कि :

हाय किसके उर में

उतारूँ अपने उर का भार?

और यहीं प्रकृति की अपूर्णता प्रतीत हुई तथा उसके स्थापन पर नारी का आविर्भाव हुआ।

स्त्री-पुरूष के प्रणय-संबंध का एक दूसरा ही रूप पंत के यहाँ दिखाई पड़ता है। इसमे न तो प्रसाद की-सी मधुचर्या है और न निराला का-सा उद्दाम आवेग। पंत के प्रणय-चित्रण की विशेषता उसकी शैशव-सरलता में है, इसमें न तो मधु की-सी प्रगाढ़ मिठास है, न ज्वर-सा उफान। इसमें छोटे-से पहाड़ी झरने की-सी तरलता है।

'उच्छ्वास', 'आँसू' और 'ग्रंथि' की सरल बालिका को जिस भोलेपन के साथ पंत ने स्मरण किया है, उसके साख्य संबंध को जिस सहजता से प्रकट किया है वह बेजोड़ है। वहीं पंत की 'अप्सरा' तो निखिल कल्पनामयी ही हैं। इसका वर्णन करते-करते अंत में कवि कहता है कि 'अप्सरा' कोई एक नारी-मूर्ति नहीं है, बल्कि नारी-सौंदर्य संबंधी समस्त संपदा का पूंजीभूत रूप है, जो प्रत्येक युग में नवीन रूप रच-रचकर आया करती है और जिसके निर्माण में सम्पूर्ण मानव-जाति की पूरी प्रतिभा लग गई है।

निखिल विश्व ने निज गौरव

महिमा सुखमा कर दान,

निज अपलक उर के स्वप्नों से

प्रतिभा कर निर्माण,

पल पल का विस्मय, दिशि-दिशि की

प्रमिमा कर परिधान

तुम्हें कल्पना औ 'रहस्य' में

छिण दिया अनजान।

(सिंह, 65-66)

नारी - सौदंर्य की स्थूल शारीरिकता तक ही सीमित रहने के कारण वे भीतर-भीतर नारी-रूप की नश्वरता के प्रति इतने अधिक सतर्क थे कि उनके लिए किसी शाश्वत, सार्वभौम नारी-रूप की कल्पना असंभव थी। सौंदर्य की अनश्वरता की विश्वासी ही 'अप्सरा' की कल्पना कर सकता है।

'ग्रंथि' के कवि पंत की प्रणय-भावना 'भावी पत्नी' की कल्पना में ही व्यक्त हो सकी। वस्तुत: छायावाद के स्वच्छंद प्रेम का आलंबन 'प्रेयसी' ही रही और आजीवन वह 'प्रेयसी' ही बनी रही, पत्नी के रूप में उसे प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त न हो सका। इसलिए छायावाद की अधिकांश कविताओं का नारी-सौदंर्य अशरीरी और हवाई है तथा प्रेम-भावना भी कल्पनावासी तथा अतृप्तिपरक है। पंत की रचनाओं में इस प्रवृति की प्रधानता है।

पंत की कल्पना शक्ति और सौंदर्य चेतना - छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में कोमल भावनाओं, कल्पनाओं एवं सौंदर्य का सुंदर वर्णन मिलता है। इनकी ज्यादातर रचनाएँ प्राकृतिक सौंदर्य की छटा बिखेरती नजर आती हैं। पंत का प्रकृति-चित्रण उनके समकालीन कवियों में सबसे बेजोड़ है। वे छायावादी, समाजवादी आदर्शों से प्रेरित प्रगतिवादी तथा अरविंद दर्शन से प्रभावित थे।

पंत ने अपनी रचनाओं में प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ मानव सौंदर्य का भी आकर्षक समन्वय किया है। उनके काव्य में रोमानी दृष्टि से मानवीय सौंदर्य का चित्रण है एवं प्रगतिवादी

रचनाओं में मानवीय सौंदर्य का वास्तविक चित्रण हैं। अपनी रचनाओं के आरंभिक दौर में वे प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत नजर आते है एवं उसके उपरांत कवि की काव्य-चेतना में परिवर्त्तन होता है और वे मानव सौंदर्य की ओर आकर्षित होते हैं तथा अंतिम दौर में वे अरविंद दर्शन से प्रभावित होते हैं। पंत की प्राय: हर रचनाओं में एक प्रकार की संगीतमयता, स्वर सौंदर्य, और ध्वनियों की मधुरता मिलती है।

वे अपनी कल्पनामयी दृष्टि से ऐसी रचना करते हैं जो हमें वास्तविक दृश्यों का बोध कराती है और हम प्रकृति से एक गंभीर जुड़ाव महसूस करने लगते हैं। उनकी कल्पनामयी कविता हमारे प्राकृतिक हृदय और बिंब को जागृत कर देती है और हम कल्पना के लोक में खो जाते हैं। इनके काव्य की सर्वोपरि विशेषता यह है कि विषय-वस्तु की भिन्नता होने पर भी उनमें कल्पना की स्वच्छंद उड़ान, प्रकृति के प्रति आकर्षण और प्रकृति एवं मानव जीवन के कोमल ओर सरस पक्षों के प्रति अटूट आग्रह है। अपने काव्य में कल्पना के महत्व को बताते हुये उन्होंने लिखा है कि:- ''मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हूँ, मेरी कल्पना को जिन-जिन विचारधाराओं से प्रेरणा मिली है, उनका समीकरण करने की मैंने चेष्टा की है। मेरा विचार है कि 'वीणा से लेकर 'ग्राम्या' तक अपनी सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को ही वाणी दी है।''

कवि का जुड़ाव प्रकृति के सरस पक्षों की ओर अधिक रहा है। कभी-कभी इनकी दृष्टि यथार्थ से प्रकृति के कठोर रूप की ओर भी होती है परंतु कोमल पक्षों की ओर पंत ज्यादा आकृष्ट हुये हैं। प्रकृति और सौन्दर्य के सहज-चित्रण और खड़ी बोली की कोमलता के विकास में, छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भ पन्त का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पंत की कल्पना-शक्ति विशाल है। वे चींटी को देखकर भी उसपर कविता कर लेते है जैसे-

चींटी को देखा? वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे सी हिल डुल
चलती लघु पद पल-पल मिल जुल,
यह है पिपीलिका पाँति ! देखो ना किसी भाँति
काम करती वह सतत, कन-कन कनके चुनती अविरत

पंत के संबंध में यह बात जग-जाहिर है कि उन्होंने अपनी रचना के माध्यम से केवल प्रकृति के सौंदर्य का ही गुणगान किया है परंतु, यह तथ्य पूर्णतया सत्य नहीं है। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से मानव जीवन के उन्नत भविष्य की कल्पना भी की है।

अत: हम कह सकते हैं कि पंत एक ऐसे कलम के धनी कवि हैं, जिनकी रचनाओं में प्रकृति, मानव, कल्पना, प्रेम और सौंदर्य का सुंदर समावेश है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि पंत का हिंदी साहित्य के छायावादी युग में दिया गया योगदान अविस्मरणीय है।

पल्लव के पंत

'पल्लव' भारत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत के प्रारम्भिक काव्य-प्रयोगों की परिणति है। यह एक कविता संग्रह है, जिसका प्रकाशन 'राजकमल प्रकाशन' द्वारा किया गया था। इसमें 32 रचनाएँ है जो सन् 1918 ई० से 1924 ई० तक की कृतियाँ है। पंत ने 'विज्ञापन' में लिखा है कि उसने प्रत्येक वर्ष की 2-3 रचनाएँ ग्रंथ में संग्रहीत कर दी है।

'पल्लव' सुमित्रानंदन पंत की काव्य-प्रतिभा का गौरीशंकर है और उसे इसी रूप में काव्य-पारखियों ने ग्रहण किया हैं। पंत की रचनाएँ कल्पना, कला, मूर्तिमान, भाषा-माधुर्य तथा अभिव्यंजना आदि सभी में आगे हैं। यह ग्रंथ पंत के कल्पनाशील किशोर जीवन का उत्कृष्ट ग्रंथ है।

पंत ने 'पल्लव' की भूमिका में ब्रजभाषा का जो घोर विरोध किया है, वह केवल भाषाओं के लिए नहीं था। ब्रजभाषा के साथ ही वे ब्रजभाषा के रीतिकाव्य की तथा उनके समर्थक रूढ़िरक्षक पंडितों का विरोध कर रहे थे। पंत ने कल्पना-तत्व को भावात्मक सौदंर्य के समान स्थान दिया है। पंत के काव्य ने शिल्प के क्षेत्र में अधिक परिवर्तन नहीं किया है परंतु भावजगत् में परिवर्तनों के कारण उनकी विचारधाएँ मोड़ लेती रहीं है। इस क्षेत्र में वे छायावाद के प्रदेश को नहीं नकार पाते।

''भाषा को 'संसार का नादमय चित्र' कहकर पंत ने 'पल्लव' की 'प्रवेश' शीर्षक भूमिका में खड़ी बोली को काव्य के नए संवेदनों के लिए ब्रजभाषा की अपेक्षा अधिक उपयुक्त घोषित किया।'' (प्रेमशंकर, 2002)

पंत का प्रौढ़ काव्य-चरण 'पल्लव' है। उनकी लंबी सृजनयात्रा में कई दृष्टियों से वह उनके काव्य का सर्वोत्तम प्रतिनिधि ग्रंथ भी है। पंत ने काव्य के नये प्रतिमानों की स्थापना की है और रचना संबंधी अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

हिन्दी स्वच्छंदतावादी काव्य की यात्रा में 'पल्लव' एक नए मोड़ का संकेत है। पंत ने अपनी कविता 'परिवर्तन' में प्रकृति-चित्रों के साथ गीतात्मकता की भी सृष्टि की ।

''कवि केवल भावनात्मक उद्वेलनों तक सीमित नहीं रहता, उसमें बौद्धिक प्रतिकियाएँ भी दिखाई देती हैं। उसकी दृष्टि जीवन-यथार्थ की ओर जाती है और आरंभ का स्वप्न-जगत् अधिक कठोर भूमि का संस्पर्श करता है।''

(प्रेमशंकर, 2002)

'गुंजन' के पंत

'गुंजन' पंत द्वारा रचित एक विशिष्ट ग्रंथ है, जिसकी रचना सन् 1932 ई0 में की गई। इस ग्रंथ को कवि के विकास का प्रतिनिधि ग्रंथ भी कहा जा सकता है। 'गुंजन' में पंत के प्रणय गीतों के साथ-साथ प्रेम और सौंदर्य का विस्तृत विवेचन किया गया है। पंत ने 'गुंजन' के सम्बन्ध में कहा है कि :- ''पल्लव और 'गुंजन' काल के बीच में मेरा किशोर भावना का सौंदर्य-स्वप्न टूट गया। दर्शनशास्त्र और उपनिषदों के अध्ययन ने मेरे रागत्व में मंथन पैदा कर दिया और उसके प्रवाह की दिशा बदल दी।'' (पंत, पृ0-4)

हम कह सकते हैं कि जब कवि की कल्पना छायालोक से उतरकर इस सुख-दुःख से पूर्ण जनाकीर्ण पृथ्वी पर पड़ी तो, उसके संवेदनशील हृदय ने उन विषमताओं को भी देखा जो उसके प्रिय मानव को पशु से भी बुरी दशा में डाले हुये है। इस चिंतन ने कवि के दृष्टिकोण को बदल दिया एवं इसके फलस्वरूप 'गुंजन' की रचना हुई।

प्रकृति-चित्रण में भी 'गुंजन' पन्त की 1932 तक की प्रतिनिधि रचना है। प्रकृति से अनन्य, प्रेम से लेकर विराग तक की कहानी इसमें समाहित है। गुंजन में 'चांदनी' के ऊपर दो कविताएँ मिलती है। एक में कवि के हृदय का विषाद फूट निकला है। वे कहते है :-

'जग के दुख से जर्जर-उर,
बस मृत्यु-शेष है जीवन।।'

'गुंजन' में चिंतन की प्रधानता है। इसमें कहीं-कहीं प्रकृति के दृश्य का चित्रण कर उनसे अनेक दार्शनिक निष्कर्ष निकाले हैं। सौंदर्य-चित्रण में प्रकृति का उपयोग अनेक रूप से होता आया है। इस दिशा में गुंजन' में प्रकृति का उपयोग किया गया है।

इसमें कवि का कौशल अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। शब्द योजना, विचार, कला एवं अलंकार सभी की दृष्टि से यह अत्यन्त सुन्दर है। ऐसा ज्ञात होता है कि कवि की आत्मा का सम्पूर्ण उत्साह तथा मनोवेग इस ग्रंथ में गूंज रहा है।

'गुंजन' में कवि ने सुख एवं दुख, मुक्ति एवं बन्धन और संयम तथा भोग का विवेचन किया है। छायालोक के आधार से हट जब कवि इस अधिक ठोस धरातल पर आया तो उसका हृदय आशा से पूर्ण हो उठा। संसार की प्रत्येक वस्तु में उसे एक विशिष्ट सौन्दर्य दिखाई देने लगा। इसमें कवि की भाषा शब्द और अर्थ के अपूर्व एवं सूक्ष्म सामंजस्य के रूप में व्यक्त हुई है, किंतु यहाँ कवि अधिक संयत है।'' 'पल्लव' की रचनाओं में भाषा के एक नये रूप की बाढ़-सी दिखाई देती है। अनुभूति में जैसा प्रवाह और आवेग है, वैसा ही प्रवाह और आवेग भाषा में है। किंतु 'गुंजन' में कवि का व्यक्तित्व भी अधिक प्रौढ़ हो उठा है और सरंचना भी।''

(नगेन्द्र, 2016)

अतंत: हम कह सकते हैं कि 'गुंजन' कवि के प्रौढ़ चरण का ग्रंथ है एवं इस ग्रंथ के अंतर्गत कवि वर्तमान मानव-जीवन के संकट को व्यक्त करते हुये एक नये आदर्श भविष्य का चित्रण करता है। जिसमें कविवर पंत पूर्णत: सफल हुए हैं।

ग्राम्या के पंत

1939 से 1940 तक में प्रकाशित 'ग्राम्या' में 53 कविताएँ संगृहीत हैं। पंत की इस रचना से यही स्पष्ट होता है कि पंत की काव्य प्रतिभा कितनी अधिक सुविकसित और प्रौढ़ है। 'ग्राम्या' का नया दृष्टिकोण यह है कि इस कविता में आवेश और उद्वेग नहीं है। ग्राम्या कविता संग्रह में 'प्रकृति के पल-पल परिवर्तित' सौन्दर्य के साथ ग्रामीण-जीवन का चित्रण हुआ है। कवि ने गाँवों के सौंदर्य, आनंद और उत्साह को पर्व-तीर्थ, नृत्य-गीत, पनघट और खेतों के रोमांस आदि के रूप में चित्रित किया है।

गाँव की दरिद्रता, रूढ़िवादिता, मलिनता और अपूर्णता अधिक प्रत्यक्ष होती है। भारत गाँवों का देश है और हिन्दी के अनेक कवि ग्राम जीवन से आकर्षित हुए हैं। आधुनिक कवियों में पंत ही अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने ग्राम-जीवन पर एक स्थान पर व्यवस्थित रूप से इतना लिखा है।

पंत की प्रगति संबंधी कृतियों में नवीन कला का उदय हुआ और वह कला यह है कि 'कला' को भाव से भिन्न कोई वस्तु नहीं मानता, भाव को ही उसने यह स्वतंत्रता दी है कि वह अपनी कला व्यक्त करें। इस ग्रंथ द्वारा कवि अपने भावों को सहजभाव से प्रकट करते है। पंत के वर्णनों में चित्रमयता बनी हुई है, विशेषरूप से प्रकृति संबंधी रचनाओं में। उदाहरण के लिए गंगा, संध्या के बाद, दिवा स्वप्न, रेखाचित्र, आदि हैं। प्रकृति-सम्बंधी कविताओं में कही-कहीं प्रवाह भी विलक्षण है जैसे- आम्र, विहग, झंझा के नीम आदि में। 'ग्राम्या' काव्य ग्रंथ में विरोधी शब्दों के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न किया है जैसे :- 'बालू के प्रति' में। इस प्रकार चित्रमयता, भावमयता, यर्थाथपूर्णता से पंत ने ग्राम्या की रचना की।

प्रांसगिकता:

प्रकृति जिसे हम 'प्रकृति माँ' कह कर 'माँ' का स्थान देते हैं, जिस प्रकार माता अपने शिशु से नि:स्वार्थ भाव से प्रेम करती है, उसका लालन-पालन करती है, ठीक उसी प्रकार यह प्रकृति हमारा लालन-पालन एवं रक्षा करती है। परंतु क्या आज हम अपनी प्रकृति माँ की रक्षा करते हैं? अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाली प्रकृति खुद आज खतरे में है।

आदिकाल से ही कवियों का प्रकृति के प्रति मुख्य आकर्षण रहा है। प्रकृति की गोद में वे इतने खो जाते हैं कि अन्य किसी भी चीज का बोध नहीं होता। इस प्रकृतिपरक रचनाओं का वर्चस्व सबसे ज्यादा छायावाद युग में देखने को मिलता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण एक माता, एक युवती, एक सहचरी के रूप में किया। इन सबों में मुख्यत: सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति से जुड़ी कई रचनाएँ की। वे शुरू से ही प्रकृति की गोद में खेले हैं। उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट झलकता है कि प्रकृति के प्रति उनका लगाव किस प्रकार का है।

आज प्रकृति अपना अस्तित्व खोती जा रही है। इस भौतिकवादी युग में सारे लोग प्रकृति से अपना मुख मोड़ रहे हैं। धूप से बचने के लिए उन्हें छाँव तो चाहिए पर वे पेड़ नहीं लगाएँगे। जब-जब प्रकृति ने अपना विराट रूप धारण किया है, जब-जब प्रकृति ने अपना रोष प्रकट किया है, तब-तब मनुष्यों को हानि हुई है। प्रकृति से खिलवाड़ करना अर्थात् अपने स्वयं के जीवन से खिलवाड़ करना होगा।

आज हमें प्रकृति की उस सुषमा, उस सौंदर्य से परिचित होना चाहिए। सारे लोगों को जागरूक कर प्रकृति की महत्ता को जानना चाहिए। प्रकृति परक रचनाओं को पढ़कर, उसमें रम कर प्रकृति का ख्याल और देखभाल करनी चाहिए। इस संसार में प्रकृति ही अपनी है, इसके बगैर सारे मिथ्या हैं। प्रकृति के साथ मनुष्य अपने एकांत को भी भूल जाता है। अत: हमें प्रकृति की रक्षा, उसका सम्मान करना चाहिए और उसके ऋण को चुकाने के लिए अथक प्रयास करना चाहिए।

उपसंहार :

छायावाद शब्द को लेकर साहित्य के जिज्ञासुओं, विचारकों और आलोचकों ने बड़ा भ्रम फैलाया। द्विवेदी युग के बाद जिस काल का उदय हुआ उसे 'छायावाद' के नाम से जाना जाता है। इस युग की रचनाओं में प्रकृति वर्णन के क्षेत्र में महान परिवर्त्तन हुआ। प्रकृति को कहीं आध्यात्मिक भावों के लिए ग्रहण किया गया है तो कहीं प्रेमाख्यानक भावों के लिए। इस युग में पहला परिवर्त्तन यह हुआ की कवि हृदय की सूक्ष्म भावनाओं का वर्णन करने लगे। और इस प्रवृति के सबसे सुंदर प्रतीक सुमित्रानंदन पंत हैं। पंत ने अपनी रचनाओं में बड़ी सूक्ष्मता और गहराई से प्रकृति के प्राणों को पहचाना है। उन्होंने प्रकृति की हर-एक वस्तु में चेतना को जगाया है। उन्होंने प्रकृति के शरीर के साथ-साथ उसकी आत्मा को भी पहचाना है। इन्होंने अपनी सारी रचनाओं में प्रकृति के अलग-अलग रूपों का वर्णन किया है।

'पल्लव' उनकी रचनाओं का प्रतिनिधि ग्रंथ है। इसमें उन्होंने प्रकृति के कोमल तथा सरस रूपों का वर्णन किया है जो हमें प्रकृति के प्रति प्रेम भाव लाने को विवश कर देते हैं। इसमें उन्होंने प्रकृति को सहचरी के रूप में प्रकट किया है जो उनके कदम से कदम मिलाकर चलती है और विपरीत परिस्थिति में भी सहभागिनी है। 'गुंजन' में कवि की परिपक्वता उभर कर सामने आयी है। यहाँ कवि ने प्रकृति को मानव से जोड़ना चाहा

है। यह कवि के प्रौढ़ चरण के काव्य का प्रतिनिधि ग्रंथ है। 'गुंजन' में कवि प्रकृति के साथ-साथ मानव जीवन की ओर भी आकृष्ट हुआ है। वहीं दूसरी ओर 'ग्राम्या' में कवि ने ग्रामीण जीवन में प्रकृति के महत्व को दर्शाया है। यहाँ कवि ने गाँवों के सौंदर्य से पाठक को परिचित कराना चाहा है।

अत: हम कह सकते हैं कि पंत जी का सम्पूर्ण काव्य उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। अपने अनुपम काव्य रचना के लिए पंत जी की गणना इस युग के बड़े कवियों के रूप में होती है।

संदर्भ स्त्रोत:

सहायक पुस्तकें :-

नगेन्द्र. (2016). हिंदी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

प्रेमशंकर. (2002). हिंदी स्वच्छंदतावादी काव्य, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन दरियागंज।

प्रेमशंकर. (2006). भारतीय स्वच्छंदतावाद और छायावाद, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन दरियागंज।

प्रसाद, जयशंकर. (2007). कामायनी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।

सिंह, नामवर. (1955). छायावाद, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

सहायक शोध ग्रंथ:

आधुनिक कवि- श्री सुमित्रानंदन पंत

जयशंकर प्रसाद : कामायनी (आनंद सर्ग)

उदयभानु सिंह 'छायावाद'

नामवर सिंह 'छायावाद'